वैदिक वाङ्मय में बैठ-सम्प्रदाय

डॉ. जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
के. २२/३९, पंचगंगा
वाराणसी

❖

प्रतिमुद्रण

पण्डित श्री क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय स्मृति-ग्रन्थ

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय
वाराणसी

वैदिक वाङ्मय में बैठ-सम्प्रदाय

डॉ. जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
के. २२/३९, पंचगंगा
वाराणसी

❋ ❋ ❋

विशाल वैदिक वाङ्मय में एक विशिष्ट सम्प्रदाय है—बैठ, इसका उद्देश्य है थोड़े समय में संकेताक्षरों द्वारा संहिताओं के वर्णों, पदों आदि को इस प्रकार स्मरण कर लिया जाना कि उनमें किसी प्रकार की विकृति या सम्मिश्रण न हो सके और सम्पूर्ण संहिता आसानी से कण्ठस्थ हो सके। बैठकार ने ऋ. सं. अध्याय ३४ वर्ग १५ की भूमिका में कहा है—

अष्टकाध्यायवर्गर्क्षु पृष्टा वर्णक्रमादयः।
सर्वे मे प्रतिभासन्ते व्युत्क्रमेण क्रमेण वा।।

अर्थात् संहिता के किसी भी अष्टक, अध्याय, वर्ग, ऋचा के वर्णक्रम आदि मुझे सब उपस्थित हैं, आप उल्टे-सीधे कैसे भी पूछ लें। वर्णों का संख्यामान, उनके द्वारा वर्गक्रम और अध्याय-क्रम से पदादि संख्या का ज्ञान रखना ही बैठ का उद्देश्य है। इसमें अक्षरों की संख्यामानसूचक परिभाषाएँ प्रायः पद्य में हैं और एकाक्षरी बैठ, चतुरक्षरी बैठ, अष्टाक्षरी बैठ आदि भेदों से ये परिभाषाएँ भी भिन्न-भिन्न हैं, अर्थात् इनके अक्षरमान में भी भेद है। इस प्रकार इसके दो भाग हैं—परिभाषाभाग और बैठभाग।

बैठ एक पारिभाषिक शब्द है

महामुनि पाणिनि ने व्याकरण में टि, घु, घि, नदी आदि संज्ञाओं का उपयोग किया है, जिनसे किन्हीं विशेष शब्दों का बोध होता है; किन्तु इन संज्ञावाचक शब्दों का कोई व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ नहीं होता, इसी प्रकार घी फू जी जा आदि रूप में अक्षरों के—व्यञ्जनयुक्त अथवा केवल स्वरों के संकेत से सम्पूर्ण वैदिक संहिताओं के पदों का बोध कराने वाली प्रक्रिया के लिए बैठ संज्ञा का प्रयोग किया गया है। इसका भी कोई व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ नहीं है; किन्तु एक नियत संख्या को बताने के लिए प्रयुक्त यह शब्द उन-उन वर्णसमुदायों का वाचक है।

बैठ कई प्रकार के होते हैं—एकाक्षरी बैठ, चतुरक्षरी बैठ, अष्टाक्षरी बैठ आदि। जैसे व्याकरण में गुणशब्द से अ ए ओ या वृद्धिशब्द से आ ऐ औ का बोध होता है, ऐसे ही बैठ शब्द से किसी विशेष संख्यावाचक वर्ण-समुदाय का बोध होता है, इसलिए स्वरसहित एकाक्षर

व्यञ्जन भी वर्णसमुदाय ही माना जाता है; क्योंकि बिना स्वर के क् आदि व्यञ्जन से किसी अर्थ का बोध नहीं होता, अत: उपर्युक्त लक्षण से एकाक्षरी बैठ में कोई अव्याप्ति नहीं होती।

बैठ के प्रवर्तक और ग्रन्थकार

अष्टाध्यायी में दो सूत्र हैं—१. तेनोक्तम् (४.१.१०३) और २. कृते ग्रन्थे (४.१.११६), वृत्तिकार ने इनके उदाहरण दिये हैं—पाणिनिना प्रोक्तं पाणिनीयम् तथा वररुचिना कृतो वाररुचो ग्रन्थ:। यद्यपि किसी ने इस विषय को कहा या किसी ने इस विषय में ग्रन्थ रचा, इसमें सामान्य रूप से कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता; किन्तु व्याकरण के नियमानुसार दोनों में भिन्न प्रत्यय होते हैं, इसीलिए टीकाकारों ने स्पष्ट किया है कि किसी विषय का जो सर्वप्रथम प्रवर्तन करता है, वह उसके द्वारा प्रोक्त कहा जाता है और उस विषय के विकीर्ण सिद्धान्तों को एकत्र कर लिखने वाला ग्रन्थकार कहलाता है।

इस बैठ सम्प्रदाय के भी प्रथम उपदेष्टा श्री दक्षिणामूर्ति माने जाते हैं, जैसा कि इस विषय के प्रारम्भिक ग्रन्थ चातुर्ज्ञानम् की प्रथम कारिका में कहा है—

समान-नान्त-विवृतपदान्येकपदानि च।
दक्षिणामूर्तिराहैतच्चातुर्ज्ञानं विदुर्बुधा:।।

इसी विषय के पदवर्णसंख्याक्रम नामक ग्रन्थ (सरस्वतीभवनस्थ ग्रन्थ-सं. २३७२) की पुष्पिकाएँ इस प्रकार हैं—

इति श्रीदक्षिणामूर्ति संहितायां पदवर्णसंख्यायां शक्तिश्रीर्नाम प्रथमाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां पदश्रीर्नाम द्वितीयाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां मन्त्रश्रीर्नाम तृतीयाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां आत्मश्रीर्नाम चतुर्थाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां जगच्छ्रीर्नाम पञ्चमाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां ज्ञानश्रीर्नाम षष्ठाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां ज्योतिश्रीर्नाम सप्तमाष्टकं सम्पूर्णम्।
इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां पदवर्णसंख्यायां पूर्णश्रीर्नाम अष्टमाष्टकं सम्पूर्णम्।

उपर्युक्त कारिका तथा पुष्पिकाओं से सिद्ध है कि इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री परमदक्षिणामूर्ति हैं और उनके शिष्य-प्रशिष्यों ने इसे पल्लवित किया; किन्तु इसका ग्रन्थकार रावण है, उसी चातुर्ज्ञानम् की अन्तिम कारिका है—

इतस्ततोऽभिहितं यच्चातुर्ज्ञानस्य लक्षणम्।
तदेकीकृत्य कथितं पङ्गुना रावणेन तु।।

[चातुर्ज्ञान के जो लक्षण इधर-उधर कहे गए थे, उन्हें पङ्गु रावण ने एकत्र करके कह दिया है, अर्थात् उन्हें ग्रन्थ का रूप दे दिया है।]

यह रावण सुप्रसिद्ध लङ्केश्वर रावण था या कोई और? इस पर निश्चित रूप से तो कुछ कहा नहीं जा सकता; परन्तु लङ्केश्वर रावण को ही सभी शास्त्रकारों, ग्रन्थकारों एवं विद्वानों ने वेदों का भाष्यकार स्वीकार किया है। उसके वेदों पर किये भाष्य उपलब्ध हैं, याज्ञवल्क्य आदि की तरह रावणशिक्षा भी प्राप्य है, वाल्मीकि रामायणादि ग्रन्थों में रावण के अद्भुत वैदुष्य का प्रचुर वर्णन है। अतः विश्वास होता है कि वैदिक वाङ्मय की इस नई विधा का ग्रन्थकार वही हो सकता है। सरस्वतीभवन-ग्रन्थालय की सात मातृकाओं में 'पङ्गुना रावणेन तु' यही पाठ है, केवल एक मातृका (सं. ६०३) में 'पङ्गुना रायणेन तु' यह पाठ है, इससे इस समस्या का कोई समाधान नहीं होता; क्योंकि चातुर्ज्ञानम् के अतिरिक्त सभी बैठ-ग्रन्थों की पुष्पिकाओं में 'इति रावणकृते एकाक्षरीबैठे', 'इति रावणकृते चतुरक्षरीबैठे', 'इति रावणकृतेऽष्टाक्षरीबैठे' ये पुष्पिकाएँ मिलती हैं। अतः लङ्केश्वर रावण को ही बैठ-ग्रन्थों का ग्रन्थकार मानना उचित लगता है, रही पङ्गु विशेषण की बात, पङ्गु शब्द यद्यपि लोक में खञ्ज (लङ्गड़ा) अर्थ में प्रयुक्त होता है; किन्तु स्मृति-चिन्तामणि के—

भिक्षार्थं गमनं यस्य विण्मूत्रकरणाय च।
योजनान्न परं याति परिव्राट् पङ्गुरुच्यते।।

इस श्लोक के अनुसार उसे परिव्राट् अर्थ में प्रयुक्त किया जा सकता है, रावण एक नैष्ठिक तपस्वी था।

बैठ का अध्ययन-क्रम

बैठ के अध्येताओं के लिए यह क्रम है—१. चातुर्ज्ञानम्, २. पदगाढः, ३. एकाक्षर बैठ, ४. चतुरक्षर बैठ, ५. अष्टाक्षर बैठ। इस प्रकार चातुर्ज्ञानम् इस शिक्षा का प्रथम सोपान है, चातुर्ज्ञानम् की परिभाषा उसकी प्रथम कारिका में दी है—

समान-नान्त-विवृतपदान्येकपदान्यपि।
दक्षिणामूर्तिराहैतच्चातुर्ज्ञानं विदुर्बुधाः।।

समान-नान्त-विवृत और एकपद ये चार क्या हैं? और उनकी प्रतीति कैसे होती है? यह जिसमें बताया गया है, उसे चातुर्ज्ञानम् कहते हैं।

१. समानपद—यहाँ समान एक परिभाषिक पद है, तुल्य या सदृश का पर्याय नहीं। जो विसर्ग आकार के बाद आता हो और उसके आगे घोष प्रयत्न के वर्ण हों अथवा अन्य वर्णों

से युक्त श ष स आते हों, वह समानपद कहलाता है, इसमें लुप्तविसर्गान्त, विसर्गान्त और अविसर्गक वर्णों की गणना होती है, जैसे—'सजोषा धीरा' इस मन्त्र में सजोषा: प्रथमा बहुवचन का रूप है, उसके आगे घोषवर्ण है ध, यहाँ जो विसर्ग का लोप हुआ है वह समानपद कहलाएगा। इसी प्रकार 'मृभुक्षा नर्यस्त्वं' इस मन्त्र में न-परक और 'उदितेऽनागा मित्रो' मन्त्र में म-परक लुप्तविसर्ग होने से ये समानपद के उदाहरण हैं।

२. नान्तपद—ह्रस्व या दीर्घ स्वरों (अ इ उ ऋ ऌ) के बाद आने वाले पदान्त के अकार में जहाँ लोप, आगम या अन्य विकार होने से मकारान्त या तकारान्त होने की शंका की निवृत्ति होने से नान्तपद कहलाते हैं। जैसे—'देवान्देवयते यज' यहाँ यदि 'देवाम् देव' होता, तब भी म् को अनुस्वार, परसवर्ण होकर देवान् ही बनता; किन्तु पदपाठ में अन्तर आ जाता, इसलिए नान्तपदों में इसकी गणना होने से देवान् यह द्वितीया बहुवचन है, प्रकृत्या नान्त होने से पदपाठ में अन्तर नहीं आयेगा, ऐसे ही 'तष्टान्मन्त्राँ' इसमें तष्टात् ऐसा तकारान्त रूप होने पर भी परसवर्ण होने पर तष्टान् ही बनेगा; किन्तु नान्त में गिना जाने से पदपाठ में द्वितीयान्त ही रहेगा।

३. विवृतपद—ए ऐ ओ औ को स्वर परे रहते अय् आय् अव् आव् आदेश होता है, य् का, लोप होने पर अकारान्त या आकारान्त पद रह जाता है, इसी को विवृतपद कहते हैं, 'वृषमश्चक्र इन्द्रो' इस मन्त्र में चक्रे इन्द्रो है या चक्र: इन्द्रो यह सन्देह होता है; क्योंकि दोनों में य् या विसर्ग का लोप होकर 'चक्र इन्द्रो' यही बनेगा। किन्तु विवृतपद में गिने जाने से पदपाठ में चक्रे इन्द्रो ही माना जायगा।

४. एकपद—जहाँ दो या अधिक पद सुनने में अलग-अलग प्रतीत हों; परन्तु समास आदि कारणों से पदपाठ में एक ही माने जाते हों, वे एकपद कहे जाते हैं, जैसे 'आश्रुत्कर्ण' यहाँ आश्रुत् और कर्ण ये दो पद हैं; किन्तु आसमन्तात् श्रूयते याभ्यां तौ आश्रुतौ, आश्रुतौ कर्णौ यस्य स आश्रुत्कर्ण:, यह समास हो जाने से पदपाठ में एक ही पद माना जाता है।

इस प्रकार समान-नान्त-विवृत और एकपद इन चार प्रकारों से समग्र संहिताओं के पदों की गणना करा देने से इसे चातुर्ज्ञानम् कहते हैं और यही बैठ-शिक्षा का प्रथम सोपान है[१]। इसके दो भाग हैं, प्रथम भाग में ३१ कारिकाएँ हैं, जिनमें ३ कारिकाओं में संख्या मान निकालने का प्रकार, ४ में समानपद, ४ में नान्तपद, १५ में विवृतपद, एक में एकपद संख्यामान का प्रकार है, शेष ३ में उपसंहार है, दूसरे भाग में समग्र शाकल शाखीय ऋग्वेद-संहिता के आठों अष्टकों के प्रत्येक वर्ग की उपर्युक्त चारों प्रकार से पदों की गणना की गई है। प्रत्येक पद के ऊपर एक अङ्क दिया है, जो उस ऋचा का बोधक है, जिसमें वह पद आया है।

---

१. यह ग्रन्थ (चातुर्ज्ञानम्) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित है।

अक्षरों के संख्यामान की विधि

अक्षरों के संख्यामान की आर्यभट्टीय, केरलीय, कटपय तथा ग्रहगणित में प्रयोग की जाने वाली कई पद्धतियाँ हैं, बैठ में प्राय: आर्यभट्टीय प्रथम पद्धति ही प्रयुक्त देखी जाती है, जो इस प्रकार है—

क = १, ख = २, ग = ३, इसी प्रकार म तक २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = २०, ह = १००।

स्वरों में अ = १, इ = ०००, उ = ००००० , ऋ = ०००००० , ऌ = ०००००००० आदि। इसका एक छोटा-सा उदाहरण देखें—कलियुग का प्रमाण है—४३२००० वर्ष। इसे अक्षरों में लिखने पर १० अक्षर होंगे, अङ्कों में ६ अङ्क; किन्तु इस पद्धति से केवल 'ख्यु घृ' से इसका बोध हो जायगा—

ख्	=	२
य्	=	३०
उ	=	०००००
घ्	=	४
ऋ	=	०००००००
		४३२०००

(यहाँ 'अङ्कानां वामतो गति:' नियम लगता है)।

अब बैठ का एक उदाहरण देखें—**जैरल्वीषशढ्नाढीटी**—यह ऋक्संहिता छठें अष्टक के चतुर्थ अध्याय के तेरहवें वर्ग का अष्टाक्षरी बैठ है।

१. जै — ज = ८, ऐ = ८, यह संख्या यथावत् रखी ८८, इस प्रथम अक्षर जै से इस पूरे वर्ग के समान पदों की संख्या ८८ ज्ञात हुई।

२. र = २७ इस द्वितीय अक्षर से एकाक्षर पदों की संख्या ज्ञात हुई २७।

३. ल्वी—ल्व = ७० (वसंयोगे तु सप्तति: बैठ की अपनी परिभाषा है, इसके अनुसार किसी भी वर्ण से 'व' जुड़ा हो तो उसका मान ७० होता है)। यह द्व्यक्षर पदों की संख्या है + ई = ३ यह पञ्चाक्षर पदों की संख्या है।

४. ष = ३१, यह वर्ग के त्र्यक्षर पदों की संख्या है।

५. श = ३० यह सप्ताक्षर पदों की संख्या है।

६. ढ्ना—ढ् = १४ + न = २० मिलाकर ३४ यह विसर्गान्त पदों की संख्या + आ = १ नकारान्त पद की संख्या है।

७. ढी—ढ् = १४ + ई =३ यह सातवें अक्षर से पहली संख्या (१४) अवग्रहों की तथा दूसरी (३) प्रगृह्यों की है।

८. टी—ट = ११ + ई = ३ इस आठवें अक्षर से पहली संख्या (११) मकारान्तों की तथा दूसरी (३) तकारान्त पदों की है।

इस प्रकार जै र ल्वी ष श ढ्ना ढी टी इन आठ अक्षरों से ज्ञात हुआ कि इस वर्ग में ८८ समानपद, २७ एकाक्षर पद, ७० द्व्यक्षर पद, ३ पञ्चाक्षर पद, ३१ त्र्यक्षर पद, ३० सप्ताक्षर पद, ३४ विसर्गान्तपद, १ नकारान्त पद, १४ अवग्रह, ३ प्रगृह्य, ११ मकारान्त और ३ तकारान्त पद हैं। यही अष्टाक्षरी बैठ है, इसी प्रकार वर्गों के छोटे-बड़े क्रम से चतुरक्षरी आदि बैठों के उदाहरण हैं और सम्पूर्ण संहिताओं के पदों की गणना है।

बैठ-साहित्य में सरस्वतीभवन की आढ्यता

एकाक्षर, चतुरक्षर और अष्टाक्षर बैठ के अतिरिक्त इनके सहायक ग्रन्थ चातुर्ज्ञानम्, पदगाढः आदि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वतीभवन-ग्रन्थालय में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, यहाँ बैठ के केवल ऋग्वेद पर २६ ग्रन्थ, यजुर्वेद पर ११ ग्रन्थ तथा सामवेद पर ७ ग्रन्थ विद्यमान हैं; किन्तु दुर्भाग्य है कि इन्हें समझने तथा इनका उपयोग करने वाला कोई नहीं।

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
श्रुतम् मे गोपाय